बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली -११००३४

अधिन्यास पत्र **कक्षा - पाँचवी** **प्रथम सत्र (२०२०-२१)**

विषय - हिंदी **उप विषय -रचनात्मक कार्य**

नाम:---------- कक्षा /भाग : ------- तिथि - १४-०४-२०२०

"नीचे लिखे शब्दों से कहानी करो तैयार, बने जो बड़ी मज़ेदार"

मोटू , अँधेरा, बिजली, नन्ही , परी, स्वादिष्ट खाना , जंगल , बौने , चार लड़कियाँ, डरना , बचाया, जंगली जानवर , हिम्मत , मुकाबला , मदद , डर भागना , लड़का ,छतरी , वर्षा , तूफ़ान

<u>पाँच कहानियों के नाम बताएँ जो तुम्हें भाती हैं, तुम्हें गुदगुदाती हैं 1</u>

" लेखकों का नाम संग बतलाएँ, बुद्धिमान आप कहलाएँ "

पाँच कहानियों के नाम	पाँच लेखकों के नाम

- नोट :- आप अपना यह कार्य अपनी उत्तर पुस्तिका में कर सकते हैं।
- दिये गए पाठ का पठन ध्यानपूर्वक कीजिये।

(जीवन कौशल गतिविधि) LIFE SKILL ACTIVITY

पढ़ ली बहुत पढ़ाई , सीखने की बारी अब आई !

बजट आप बनाओ , मम्मी पापा से मिला जेब खर्च

गुल्लक में बचाओ ।

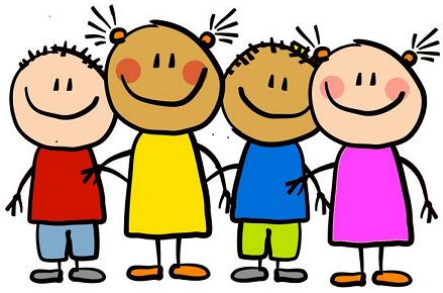

पाँच पंक्तियाँ लिखिए कि आप अपने जेब खर्च में से कितना बचाते हैं एवं कितना खर्च कर जाते हैं।

2 लाला पटेल की लायब्रेरी

पाठ-प्रवेश

- ज्ञान का भंडार हूँ मैं, पुस्तकों का संसार हूँ मैं, मनोरंजन का खजाना कहते हैं मुझे, नाम
मैं ? बच्चो, इस पहेली का हल बताइए।
- बच्चो, आज हम आजादी से पहले एक गाँव में बनी लायब्रेरी और उससे आए परिवर्तनों को

Scanned with CamScanner

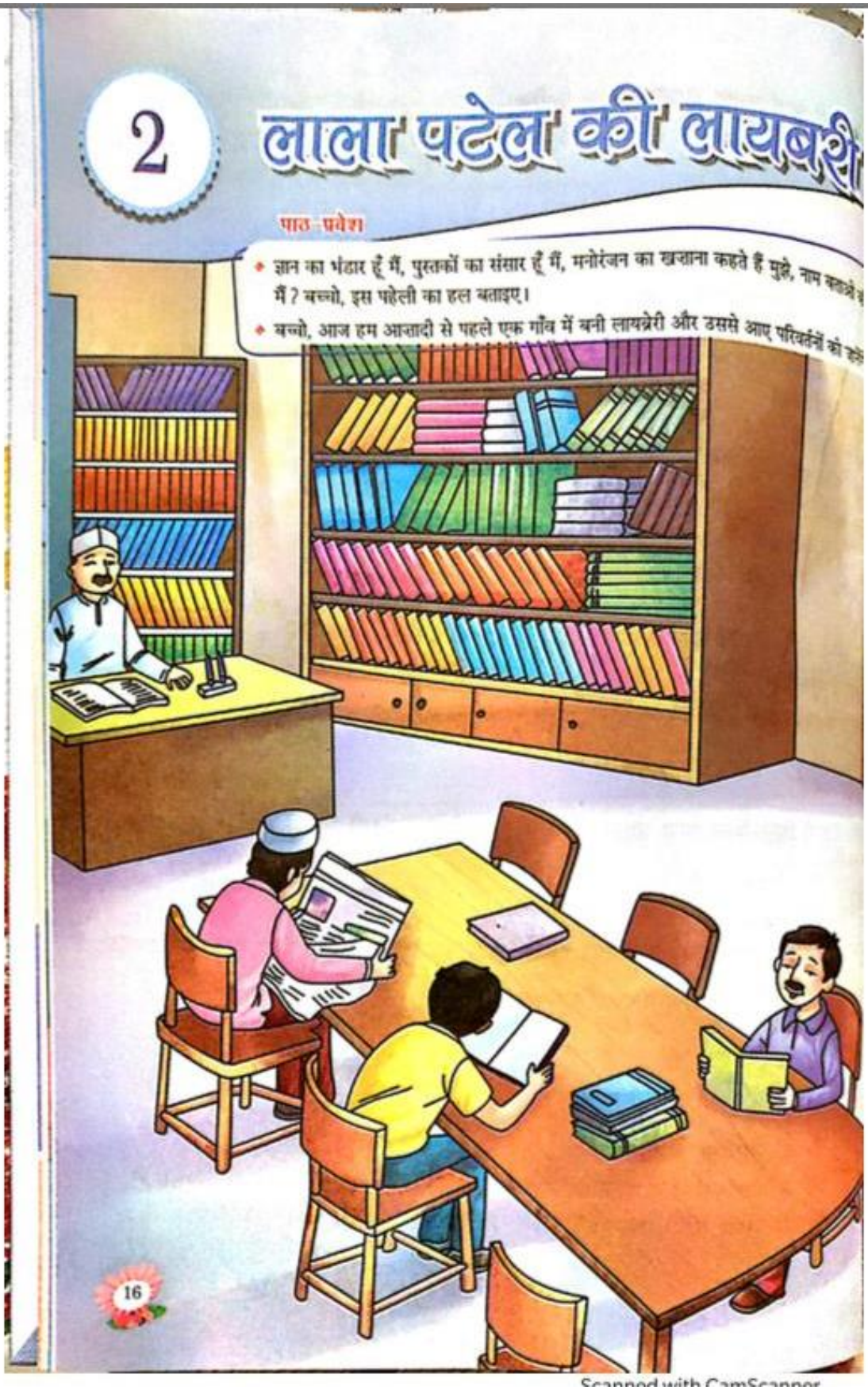

की बात है। भारत में अंग्रेज़ों का राज था। चारों तरफ़ आज़ादी के नारे गूंज रह थ। गावा का जीवन बदल रहा था। लाला पटेल का गाँव गुजरात में था। गाँव में बिजली आ गई थी। नई सड़कें बन रही थीं। किसान खेतों में नए बीज बो रहे थे। नई खाद डाल रहे थे।

लाला पटेल गाँव के बुज़ुर्ग थे। सब उनकी सलाह लेते। लाला पटेल अनपढ़ थे। वे सरकारी फ़रमान पढ़ नहीं पाते थे। सरकारी अफ़सर शहर से आते। गाँव के लोगों पर अंग्रेज़ी में रोब जमाते। अनपढ़ होने का ताना देते। एक दिन लाला पटेल ने सोचा, "सरकारी बाबू हमें गँवार समझते हैं। खेती करना क्या आसान है? उसमें भी सूझ-बूझ चाहिए। किसान खेत तैयार करता है। धान उगाता है। पशुओं की देखभाल करता है। मेरे पास ज़मीन है। मैं खेती करूँगा। इस उम्र में मुझसे लिखना-पढ़ना नहीं होगा।"

यह सोचकर लाला खेती करने लगे। एक दिन सरकारी फ़रमान आया। गाँव में 'लायब्रेरी'— पुस्तकालय बनेगा। लोग सोच में पड़ गए। लाला पटेल से सलाह लेनी होगी।

सभा बुलाई गई। लाला पटेल सभा में आए। चौपाल पर चर्चा शुरू हुई। मुखिया ने लोगों को 'लायब्रेरी' के बारे में बताया— 'लायब्रेरी' यानी ग्रंथालय जिसमें किताबें रखी जाएँगी, अखबार रखे जाएँगे। लोग यहाँ आकर पढ़ सकते हैं। गाँव के लोग 'लायब्रेरी' बनवाना चाहते थे। लाला पटेल ने सभी लोगों की बात सुनी। वे साहब से बोले, "बाबू साहब, गाँववालों की यही इच्छा है। 'लायब्रेरी' के लिए मैं भी राज़ी हूँ।"

गाँव में 'लायब्रेरी' बनाने की तैयारी शुरू हो गई। गाँव के एक मकान में 'लायब्रेरी' बनी। ग्रंथालय के अफ़सर को 'ग्रंथपाल' कहते हैं। लेकिन लोगों के लिए ये नाम कठिन थे। उन्होंने अपने ही नाम ईजाद कर लिए। 'लायब्रेरी' के लिए 'लायबरी' और 'ग्रंथपाल' के लिए 'किताब बाबू'। गाँव की 'लायबरी' के 'किताब बाबू' शहर से आए थे। उनका नाम था—केशव भाई।

'लायबरी' सबके मिलने की जगह बन गई। केशव भाई लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाने लगे। बड़े-बूढ़े इस उम्र में सीखते-सीखते एक-दूसरे का खूब मज़ाक उड़ाते। लाला पटेल भी इस पढ़ने-पढ़ाने और सीखने के खेल में शामिल हो गए।

पढ़नेवालों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी होती गई। औरतें भी 'लायबरी' में आने लगीं। केशव भाई का काम बढ़ गया। वे गाँव के लोगों को साक्षर बनाना चाहते थे। 'लायबरी' का यही

संदेश था। एक दिन एक बढ़ई 'लायबरी' में आया। लकड़ी काटने की बिजली की नई
के बारे में उसने सुना था। केशव भाई ने किताब निकालकर दी। उसे लकड़ी की अच्छी-
चीजें बनाने की जानकारी मिली। उसने तय किया कि वह 'लायबरी' ज़रूर आएगा।

एक दिन केशव भाई का चेहरा मुरझाया हुआ था। उसपर गहरी चिंता स्पष्ट दिख
थी। लाला पटेल ने केशव भाई से पूछा, "क्या बात है केशव भाई? किस चिंता में
केशव ने जवाब दिया, "सरकार का हुकुम आया है। मुझे नौकरी से छुट्टी दे दी गई
लाला को बहुत अचरज हुआ। उन्होंने केशव भाई से इस हुकुम का कारण पूछा। केशव
ने बताया, "हमारे गाँव के कुछ लड़के पकड़े गए हैं। वे आज़ादी की लड़ाई में शामिल
गए थे। पुलिस कहती है कि लड़कों को मैंने भड़काया है। मैं सरकार के खिलाफ़ हूँ...।
जी, मैं अपने गाँव लौटना चाहता हूँ। आप लोगों से मैंने बहुत कुछ सीखा। आपने
बंजर ज़मीन को एक बार फिर हरा-भरा बना दिया। धान की पैदावार दुगुनी कर दी।
में मेरी भी थोड़ी ज़मीन है। मैं उसे खेती के लिए तैयार करूँगा। उस पर खेती करूँगा
गांधी जी आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे हैं। हम सबको उनका साथ देना है।"

'लायबरी' में जमा लोग परेशान थे। लाला पटेल का चेहरा उदास था। सभी सोच
डूबे थे। अब क्या होगा? अचानक लाला पटेल का चेहरा खिल उठा। वे अपनी धुन
बोले, "बाबू, यह लाला अभी ज़िंदा है। मरा नहीं है। 'लायबरी' मैं चलाऊँगा।"

वहाँ जमा सभी लोगों के मुँह से निकला, "हाँ, केशव भाई। लाला पटेल 'लायबरी'
किताब बाबू होंगे।" लाला जोश में आ गए और बोले, "आप चिंता न करें केशव भ
'लायबरी', 'चरखा' और 'खेत', ये हमारे गाँव के मंदिर, मसजिद और गिरजाघर होंगे।
का सपना हम साकार करेंगे।" यह सुनकर लोगों की आँखों में चमक आ गई।

लोगों में नया आत्मविश्वास था। उनमें नई ताकत थी। लाला पटेल और 'लायबरी'
साथ था। इस तरह लाला पटेल 'लायबरी' के किताब बाबू बन गए। वे किसान थे। अब
थे। 'लायबरी' में उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा। 'लायबरी' चलाने का तरीका सीखा।
ने 'लायबरी' का नाम—'लाला पटेल की लायबरी' रख दिया।

आज़ादी की लड़ाई में गाँववालों ने भी हिस्सा लिया। अहिंसा को अपना शस्त्र बना
लाला पटेल 'लायबरी' चलाते रहे। लाला पटेल की 'लायबरी' की महिमा को लोग आज
याद करते हैं।

—रमणलाल व.

माइंड मैप

1 लाला पटेल कौन/कैसे थे?
- गाँव के अनपढ़ बुजुर्ग
- एक स्वाभिमानी किसान

2 गाँव में क्या और क्यों खुला?
- लायब्रेरी, गाँववालों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए

3 गाँव में हुए नामकरण
- लायब्रेरी—लायबरी
- ग्रंथपाल—किताब बाबू

4 लायबरी में कौन-कौन आते थे?
- बड़े-बुजुर्ग, औरतें और बच्चे

5 किताब बाबू कौन था और उसे नौकरी क्यों छोड़नी पड़ी?
- केशव बाबू
- आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने के कारण

6 लायब्रेरी को चलाने की ज़िम्मेदारी किसने उठाई?
- लाला पटेल ने

7 लायब्रेरी किस नाम से जानी गई?
- लाला पटेल की लायबरी